→ अरावली की प्रमुख पहाड़ियां

① मुकुन्दवाड़ा की पहाड़ी :→ कोटा व झालावाड़.

② भाकरी पहाड़ी :→ सिरोही

↳ तीव्र ढलान वाला पहाड़ी क्षेत्र

③ मालखेत व खण्डेला की पहाड़ियां – सीकर

④ सुंडा पर्वत / सुन्धा पर्वत → जालौर

नोट → यहाँ राज्य का पहला रोप-वे - 2006 मे शुरू किया गया।

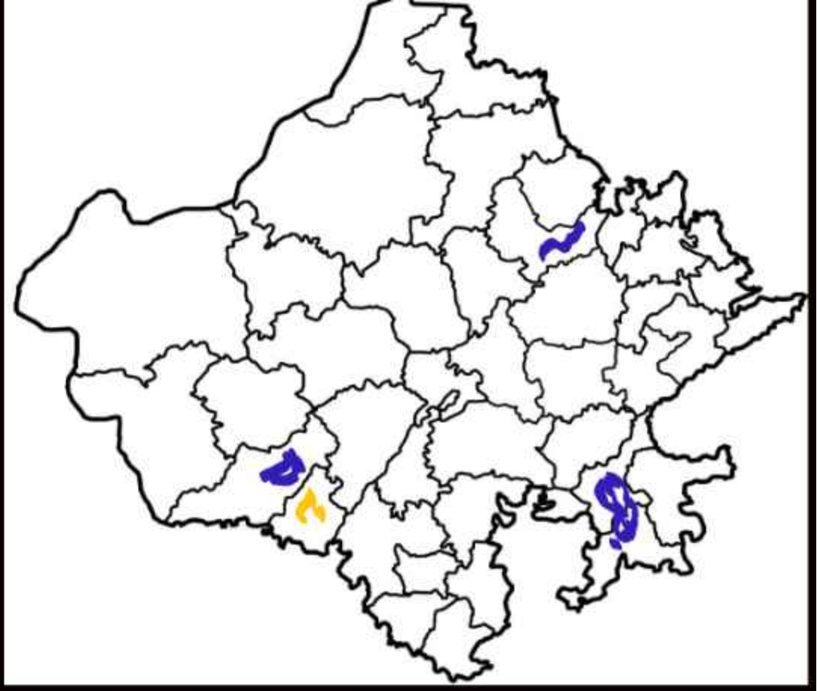

ध्यान दें : • राज्य में 7 रोप वे है।

① सुंधा माता (जालौर) - 2006

② मंसा पूर्ण करणी माता (उदयपुर) 2008

③ सावित्री माता मन्दिर पुष्कर (अजमेर) 2016

④ बाला जी मन्दिर सामोद (जयपुर) 2019

⑤ खोले के हनुमानजी से अन्नपूर्णा माता - जयपुर - 2021

⑥ नीमच माता - उदयपुर - 2024

⑦ जीणमाता रेवासा (सीकर) → अप्रैल/2024

5. मालाणी पहाड़ियां → बालोतरा से जालौर के मध्य

6. गिरवा पहाड़ी – उदयपुर
   ↳ तश्तरीनुमा पहाड़ियां

7. चिड़ियाटूक पहाड़ी → मेहरानगढ़ (जोधपुर)

8. चिल्ह हिल्स पहाड़ी – जयपुर

9. नानी सिरड़ी की पहाड़ी → सोजत (पाली)

10. छप्पन की पहाड़ियां → बालोतरा – बाड़मेर

नोट → छप्पन का मैदान → प्रतापगढ़ – बाँसवाड़ा
छप्पन का पर्वत → उदयपुर

छप्पनिया अकाल → ई. सन् – 1899,
↳ विक्रम सन् – 1956 में अकाल पड़ा

(11) देशहरो :→ उदयपुर की जरगा व रागा पहाड़ियों के मध्य का क्षेत्र जो वर्ष भर हरा भरा रहता है।

(12) त्रिकूट पहाड़ी → जैसलमेर (सोनारगढ़ दुर्ग बना है)

(13) त्रिकूट पर्वत → करौली

(14) मेरवाड़ा की पहाड़ियां → टाडगढ़ (ब्यावर)

(15) सारण की पहाड़ी → पाली

(16) मोडा पहाड़ी → झुंझुनू

(17) भामती पहाड़ी → शाहबाद (बारां)

(18) हेमकुट पहाड़ी → कुंभलगढ़ (राजसमंद)

(19) देवगिरी पहाड़ी → दौसा

(20) ईगल पहाड़ी → जयगढ़ (जयपुर)

(21) बिठड़ी पहाड़ी → तारागढ़ (अजमेर)

→ दक्षिणी पूर्वी पठारी प्रदेश :→

- → निर्माण → मिज़ोजोइक महाकल्प किटेशियस युग
- → क्षेत्रफल → 6.89%
- → जनसंख्या → 11%
- → अवशेष → गोंडवाना भूमि
- → मिट्टी → काली
- → वनस्पति → सदाबहार/सागवान जंगल
- → वर्षा → 80-120 सेमी
- → ढाल → दक्षिण से उत्तर की तरफ
- → प्रमुख फसल → कपास, मसाला, अफीम, सोयाबीन, चावल
- → समुद्र तल से ऊंचाई - 500 मीटर

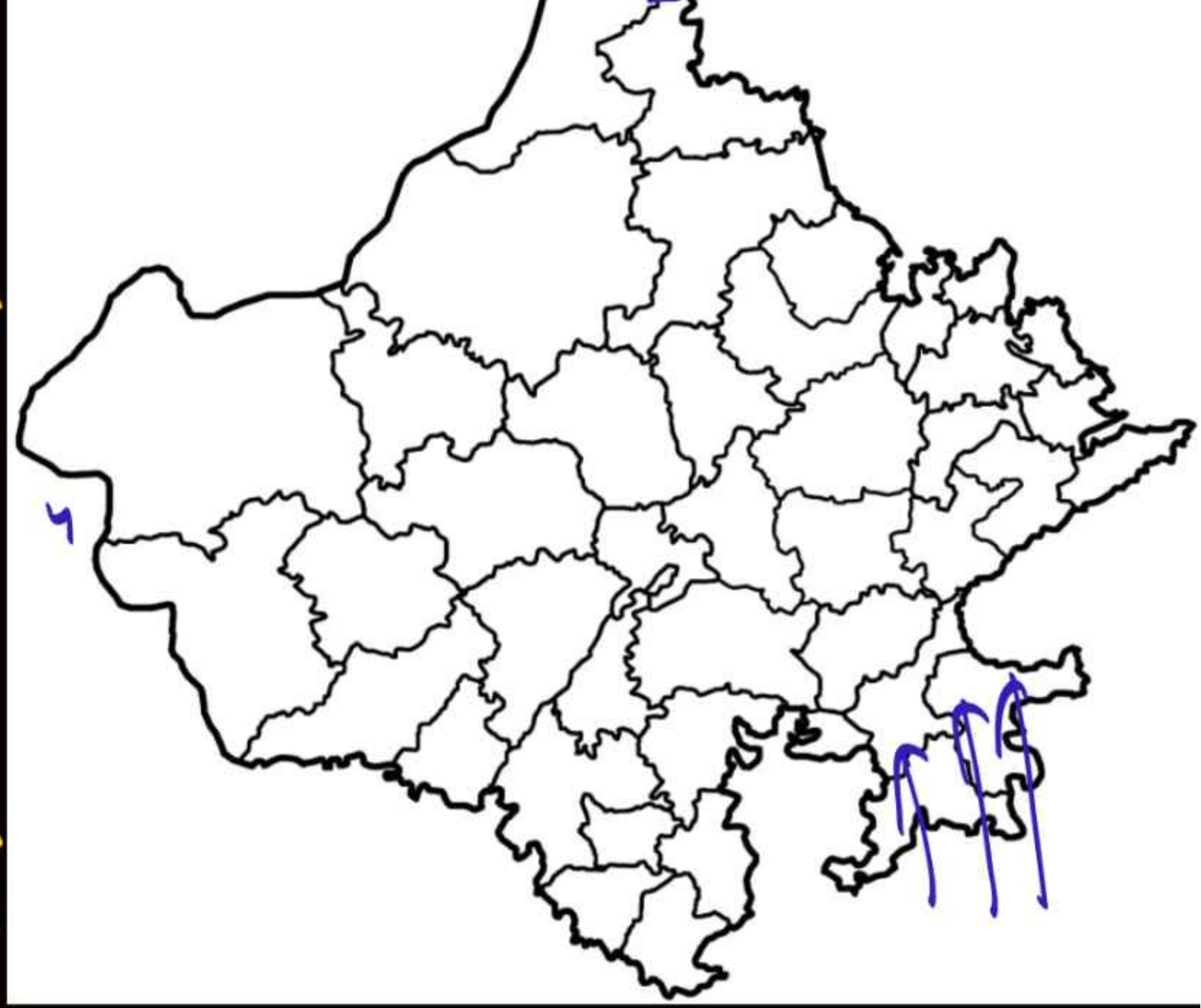

→ यह क्षेत्र मालवा के पठार का उत्तरी भाग/ उत्तर पश्चिमी भाग माना जाता है।

→ यह क्षेत्र ज्वालामुखी के दरारी उद्गार से निर्मित है।

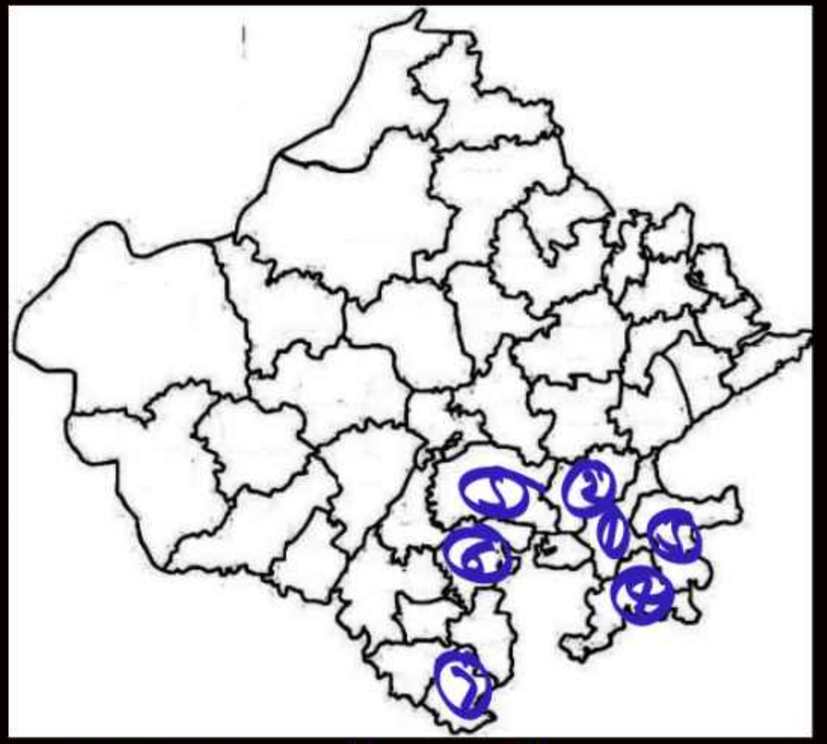

→ यह क्षेत्र अरावली व विंध्याचल पर्वत माला से घिरा हुआ है इस लिए इसे संक्रांति प्रदेश कहते है।

→ विस्तार = 7 जिलो मे :→ कोटा, बूंदी, बारां, झालावाड़, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, बांसवाड़ा।

→ धरातलीय स्थिति के आधार पर दक्षिणी पूर्वी पठारी प्रदेश के दो भाग किये गये है।

2 भाग

① दक्कन का लावा पठार

② विंध्यन का निम्न कगारी भूमि वाला क्षेत्र